2.5.22

पत्रावली पेश हुई। [illegible] फरीकैन उप. नहीं श्री वकील वादी व स्वयं वादी को बोल बाद आवाज लगवाई गई बावजूद इन्तजार के [illegible] से उप. नहीं श्री वकील वादी का बाद अदम हाजरी अदम पैरवी से खारिज किया जाता है। पत्रावली नतीजा मुरत्तब होकर बाद तामील तकमील के दाखिल दफ्तर हो।

Signature Not Verified

Digitally signed by Pooja Meena
Date: 2024.04.29 13:18:32 IST
Reason: SelfAttested

Scanned with CamScanner